

**श्री रणजीत सिंह :** यह देखते हुए कि हम लोगों का जो भी प्रचार होता है उस का मारा फायदा पाकिस्तान ने उठाया है और आज कल पाकिस्तान के सम्बन्ध विदेशों से अधिक सुदृढ़ हो रहे हैं और पाकिस्तान अपनी सेनाओं को भी ज्यादा बढ़ा रहा है, क्या उन देशों को यह उचित उत्तर नहीं होगा, और क्या भारत सरकार इस पर विचार कर रही है, कि इजराइल के साथ वह अपने सम्बन्ध और सुदृढ़ करे, वहां अपना दूतावास खोले, जिस से उन देशों को, जो मारी सहायता हम से लेते हैं और गोंदी में खेलते हैं पाकिस्तान के, कुछ सबक मिले ?

**श्री दिनेश सिंह :** मुझे इस सवाल और जवाब से ऐसा कुछ नहीं लगा कि हमारे प्रचार का फायदा पाकिस्तान उठाता है। माननीय सदस्य यह कह सकते हैं कि प्रचार हमारा नाकाफी है, और ज्यादा होना चाहिये, लेकिन जो प्रचार हम करते हैं उस का फायदा दूसरे लोग उठाते हैं, ऐसी बात नहीं है। इस लिये माननीय सदस्य ने गलत सवाल किया। जहां तक इस का सवाल है कि हम पश्चिमी देशों के साथ और अरब देशों के साथ अपने सम्बन्ध मजबूत करें, यह बात ठीक है और हम इस की कोशिश में हैं। लेकिन अगर हम इजराइल के साथ सम्बन्ध नजदीक बनायें तो इस से अरब देशों के साथ हमारे सम्बन्ध मजबूत हो जायेंगे, यह बात मेरी समझ में नहीं आती है।

**श्री रणजीत सिंह :** सम्बन्ध तो मजबूत हैं, किन इस सन्दर्भ में मैं कहना चाहूंगा कि बजाय हम और ज्यादा दुश्मन बनाने के इजराइल को दोस्त बनायें।

**श्री दिनेश सिंह :** यह तो उल्टी बात हो गई कि जिस से हम को सम्बन्ध बढ़ाना है उस से हम सम्बन्ध तोड़ लें, इस उम्मीद पर कि सम्बन्ध और मजबूत हो जायेंगे।

**SHRI M. L. SONDHI :** You can help the Arabs by influencing the Israelis. What is illogical in this ? You can bring to bear your influence with the Israelis in favour of the Arabs if you wish.

### Export of Engineering Goods during 1970-71

\*831. SHRI RAM KISHAN GUPTA : Will the Minister of FOREIGN TRADE be pleased to state :

(a) whether the programme to step up export of engineering goods during 1970-71 has been finalised; and

(b) if so, the main features thereof ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FOREIGN TRADE (SHRI RAM SEWAK) : (a) and (b). The Government and Engineering Export Promotion Council, an agency responsible for organising and promoting exports of engineering goods have been continually reviewing the export performance and adjusting promotional policies to suit the changing requirements. Annual Plan for exports of engineering goods for 1970-71 is in the process of finalization in terms of overseas contracting, raw material and other inputs required or export production.

**श्री राम कृष्ण गुप्त :** वे कौन कौन से देश हैं कि जहां हमारी इंजीनियरी गुड्स को पसन्द किया जाता है और उन देशों में इस ट्रेड को बढ़ाने के लिए क्या कोशिश की जा रही है ?

**श्री राम सेवक :** संसार के सभी देशों में हमारे यहां के इस माल को पसन्द किया जाता है और खास तौर पर अफ्रीकन कंट्रीज, थाईलैंड, जर्मनी, आस्ट्रेलिया तथा पूर्वी यूरोप आदि देशों में हमारी इंजीनियरी गुड्स को पसन्द किया जाता है।

**श्री राम कृष्ण गुप्त :** क्या अंदाजा लगाया गया है कि इससे हमें सालाना कितनी फारेन एक्सचेंज का फायदा होता है ?

**श्री राम सेवक :** 1966-67 में 32 करोड़ रुपये का माल बाहर गया, 1967-68 में 41.47 करोड़ का माल गया, 1968-69 में 84.97 करोड़ का गया। इस वर्ष 31 मार्च तक लगभग 105 करोड़ रुपये का माल विदेशों में गया।

**SHRI R. BARUA :** May I know if as a result of the shortage of steel material on the one hand rise in price<sup>1</sup>

of steel on the other there is going to be a set-back in the engineering industry and ultimately our exports may go down? May I know what steps the Government are taking to obviate this difficulty?

**THE MINISTER OF FOREIGN TRADE (SHRI B. R. BHAGAT)** : It is true that if we have more raw materials we can increase our exports much more and even this year, as the House is aware, towards the middle there was actually a fall in exports, but with the co-operation of the Steel Ministry and my colleague, the Steel Minister, we worked out a crash programme and the result was that in the subsequent years the export went up and it may touch Rs. 105 crores which is a rise of above 25% over the last year. We will continue this exercise next year also.

I quite realise the importance of the question that the hon. Member has raised that we will be faced with the shortage of raw materials and shortage of production in this sector and it will be our effort with the co-operation of the Ministries concerned to make more of these raw materials available for export-oriented industries and, if necessary, also import them so that the export effort is continued and built up.

**श्री रामावतार शास्त्री** : हमारे देश में जय इंजीनियरिंग कम्पनी, कलकत्ता में उषा के पंखों और सिलाई की मशीनें बनती हैं . . .

**अध्यक्ष महोदय** : आप जनरल क्वेश्चन करें। इंडिविजुअल और कंसर्न का नाम ले कर नहीं। ऐसी तो बीसियों होंगी।

**श्री रामावतार शास्त्री** : मुझे यह जानकारी हासिल करनी है कि उषा पंखों और उषा सिलाई मशीनों का निर्यात पिछले तीन सालों में कितना हुआ है और उससे भारत सरकार को कितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई है ?

**श्री राम सेवक** : इसकी फिगरें इस समय मेरे पास नहीं हैं। इसके लिये मुझे नोटिस चाहिये।

**अध्यक्ष महोदय** : स्पेसिफिक सवाल आप दें। ऐसे तो बीसियों इससे पैदा होंगे।

**श्री रामावतार शास्त्री** : तैयार हो कर इनको आना चाहिये। इंजीनियरी गुड्ज के बारे में कोई भी सवाल पूछा जा सकता है।

#### **Instruments required for making Nuclear Weapons based on Fission Reactions**

\*832. **SHRI SAMAR GUHA** : Will the **PRIME MINISTER** be pleased to state :

(a) the basic explosives, moderators, chemicals and electronic instruments required for making nuclear weapons based on fission reactions;

(b) whether most of these explosives, chemicals and electronics are now produced in India;

(c) if so, what are such India-made nuclear explosives, chemicals and instruments; and

(d) whether availability of such indigenous material and instruments makes the basis of calculation of cost for production of nuclear weapons in India, largely different from the cost of nuclear weapons made by the UNO experts ?

**THE DEPUTY MINISTER (SHRI-MATI NANDINI SATPATHY)** :

(a) The fission materials commonly used in nuclear weapons based on fission are plutonium and uranium-235. Sophisticated systems are adopted for triggering the device and for preventing its accidental release.

(b) and (c). Plutonium is produced in our reactors but we have agreed with the countries which assisted us to set up these reactors that we shall not use the plutonium produced therein for making nuclear weapons. While our scientists and technologists have kept themselves abreast with the latest developments in the field of atomic energy, we have not produced the devices for nuclear weapons since we are not prepared to utilise this knowledge for military purposes as a matter of national policy.

(d) The cost of nuclear weapons is related, amongst others, to the basic infrastructure of atomic energy establishments free from safeguards available to a country. Moreover, as the UN Secretary-General's Report has pointed out, one does not acquire a military capability without delivery systems and this forms a substantial part of the total cost.